ASPECTS OF TEACHING
(शिक्षण का स्वरूप)

DR. NITIN BAJPAI

Assistant Professor , B.Ed Dept.

M. P. GOV. P.G.College Hardoi

drnitin.bajpaihri@gmail.com

शिक्षण का अर्थ (Meaning of teaching)

- हिन्दी मे प्रयुक्त शिक्षण शब्द शिक्ष धातु से बना है जिसका तात्पर्य है सीख देना या सिखाना।

- शिक्षण मे एक व्यक्ति (शिक्षक) द्वारा दूसरे व्यक्ति (शिक्षार्थी) को ज्ञान प्रदान करने की क्रिया सम्पन्न होती है।

अँग्रेजी मे टीचिंग शब्द को तीन विशेष अर्थो मे प्रयुक्त किया जाता है-

<u>किसी सिद्धांत या ज्ञान के समवाय के रूप मे-</u> इस अर्थ मे टीचिंग या

एजुकेशन एक दूसरे के पर्यायवाची । उदाहरण- बुद्ध की शिक्षा, गांधी की शिक्षा, वेदो की शिक्षा।

<u>एक व्यवसाय के रूप मे</u>- शिक्षण को उन लोगो का वयवसाय माना जाता है

जिसमे एक व्यक्तिको एक निचित समय स्थान या अनुसूची के अनुसार दीक्षित या प्रशिक्षित किया जाता है।

<u>क्रियाओ या विधियो की वयवस्था के रूप मे</u>- जिसके द्वारा एक

व्यक्ति(शिक्षक) दूसरे व्यक्ति (शिष्य) को परिज्ञान, कौशल एव मूल्यो की जानकारी कराता है।

शिक्षण का अर्थ (शासन के स्वरूप के अनुसार)

- एकतंत्र शासन मे शिक्षण का अर्थ-
- इस प्रकार के शासन की वयवस्था परंपरागत सिद्धांत,कार्य केन्द्रित (classical theory of organization ,task centre) का अनुसरण करती है।

- एच सी मॉरिसन –

  "शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसमे अधिक विकसित वयक्तित्व कम विकसित वयक्तित्व के संपर्क मे आता है और कम विकसित वयक्तित्व की अग्रिम शिक्षा के लिए विकसित वयक्तित्व वयवस्था करता है।"

- इस वयवस्था मे शिक्षक का स्थान प्रमुख और छात्र का स्थान गौण होता है।

प्रजातन्त्र शासन मे शिक्षण का अर्थ

- प्रजातन्त्र शासन प्रणाली मानवीय संबंध ,वयवस्था सिद्धांत(Human relations theory of organization, Relationship –centre) पर आधारित होती है।
- एडमंड एमीडोने के अनुसार –

  " शिक्षण को अन्तःप्रक्रिया के रूप मे परिभाषित किया जाता है जिसके अंतर्गत कक्षा कथन को समलित किया जाता है जो शिक्षक तथा छात्र के मध्य परिचालित होते है कक्षा कथन का संबंध अपेक्षित क्रियायों से होता है।"

- इस वयवस्था मे शिक्षक का स्थान एक निर्देशक अथवा पथ प्रदर्शक का होता है शिक्षण मे छात्रो को अधिक क्रिया शील रहना पड़ता है।

हस्तक्षेप रहित शासन मे शिक्षण का अर्थ

- यह शासन प्रणाली आधुनिक वयवस्था सिद्धांत, कार्य तथा संबंध केन्द्रित(Modern human organization theory task and relationship – centre) पर आधारित होती है।
- जॉन ब्रूबेकर –
  "शिक्षण मे ऐसी परिस्तथियों की व्यवस्था की जाती है जिनमे कुछ रिक्त स्थान छोड़ दिये जाते है तथा कठिनाई उत्पन की जाती है छात्र उन कठिनाइयो पर विजय पाने का प्रयास करता है तथा रिक्त स्थानो की पूर्ति करने का प्रयास करता है छात्र की इस प्रकार की क्रियायें सीखने मे सहायक होती है।"

- इस प्रकार के शिक्षण मे शिक्षक की अपेक्षा छात्र अधिक क्रियाशील रहता है।

शिक्षण का अर्थ (शिक्षा दर्शनों के अनुसार)

- आदर्शवादी दर्शन
  - शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमे व्यक्ति अपने आत्म विकास एवं आत्मानुभूति के पथ पर अग्रसर होता है।
- यथार्थवादी दर्शन
  - शिक्षण एक व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति (शिक्षक) दूसरे व्यक्ति (शिक्षार्थी) की विकास प्रक्रिया का संचालनएवं नियंत्रण करता है।

प्रकतिवादी दर्शन	शिक्षण का अर्थ एक ऐसी क्रिया से लगाया जाता है जिसमे बालक के नैसर्गिक विकास को बिना किसी बाह्य हस्तक्षेप के संवर्धित किया जाता है।
प्रयोजनवादी दर्शन	शिक्षण के अंतरगर्त व्यक्ति को चुनौतीपूर्ण परिस्तिथियों का सामना करने एवं उन पर अपेक्षित सूझ बुझ एवं कौशल के साथ समाधान प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया जाता है।

अस्तित्वादी दर्शन

- शिक्षण तथा अधिगम के द्वारा छात्र की संवेदनशीलता मे अभिवरदी की जाती है जिससे वह अपनी परिसतिथियों का अहसास करते हुए विकल्पो का चुनाव कर सके और उनके परिणामो को भुगतने की जिमेवारी भी स्वीकार कर ले।

अधिगम मनोविज्ञान के अनुसार शिक्षण का अर्थ

- थोर्नडाइक के उदीपक अनुक्रिया सिद्धांत के अनुसार
- पावलव के क्लासिकल अनुबंध के अनुसार

- शिक्षण एक एसी वयवस्था है जिसके द्वारा व्यक्ति मे उदीपक अनुक्रिया संबंधो का द्रण बनाने का प्रयास किया जाता है।
- शिक्षण मे दो उदीपको के साहचर्य या युग्मन द्वारा नवीन अनुक्रिया सिखाने पर ज़ोर दिया जाता है।

- स्किनर के क्रिया प्रसूत अनुबंधन
- शिक्षण का तात्पर्य है –विभेदन उदीपक अनुक्रिया एवं प्रबलन की प्रासींगता को स्थापित करना जिससे छात्र मे नवीन व्यवहारकी रचना संभव हो सके।
- हल्ल के आवश्यकता ह्रास सिद्धांत
- इनके अनुसार भी शिक्षण के अंतर्गत भी उदीपक अनुक्रिया संबंधो के निर्माण पर बल दिया जाता है किन्तु ऐसी परिस्थितियो मे अधिगमकर्ताओ की किसी आवश्यकता की संतुष्टि होना महत्वपूर्ण माना जाता है।

- टाल्मन, लेविन वर्देमर तथा कोहलर के संज्ञानात्मक सिद्धांत के अनुसार

- शिक्षण ऐसी गतिशील एवं प्रयोजनबद्ध क्रिया के रूप मे आयोजित करने के प्रति आग्रह होता है जिसमे छात्र अपनी अंतर्क्रिया द्वारा नयी सूझ बुझ कार्य कुशलता, रचनात्मक दृष्टि तथा संज्ञानात्मक संरचना अर्जित कर सके।
- इसमे शिक्षण की परिस्थिति को अपेक्षाकृत खुला विचारपूर्ण सक्रिय एवं सृजनात्मक बनाने की कोशिश होती है।

- आधुनिक संज्ञानात्मक एवं मानवतावादी धारणाओ के प्रवर्तक ब्रूनर, असुबेल, पियाजे रोजर्स, मास्लों आदि के अनुसार
- अधिगम के तहत छात्रो की सक्रियता पर बल देते हुए छात्र केन्द्रित शिक्षण अधिगम व्यवस्था की जोरदार संस्तुति की है इन अवधारणाओ से शिक्षण के प्रतिमान परिवर्तन को पहल को बराधवा मिला है जिससे शिक्षक की भूमिका एक अनुसमर्थक की तथा छात्र की भूमिका एक अन्वेषक या खोजी की बन जाती है इसलिये 21वी सदी के प्रारभ्म से ही स्व सयमित या स्वनियमित की चर्चा ज़ोर पकड़ रही है।

शिक्षण की आधुनिक परिभाषाये

- **<u>बी ओथोनल स्मिथ के अनुसार</u>–**
  “ शिक्षण क्रियाओ की एक विधि है जो सीखने की उत्सुकता जाग्रत करती है ।”

- **<u>इज़राइल शैफलर के अनुसार-</u>**
  “शिक्षण एक ऐसी क्रिया है जिसका उद्देश्य अधिगम की प्राप्ति सुनिचित कराना है और जिसका सम्पादन ऐसे ढंग से होता है जिसमे शिक्षणार्थी की बौद्धिक सत्य निष्ठा एवं स्वतन्त्र रूप से निर्णय लेने की क्षमता के प्रति सम्मान का भाव निहित रहता है।“

- **रोनाल्ड टी हाइफ़न के अनुसार-**

  "शिक्षण मे त्रिक तत्व- शिक्षक शिष्य तथा विषयवस्तु होते है तथा ये तत्व अपने गुण की द्रष्टि से गतिशील होते है।"

- **बी पाल कोमाइसार के अनुसार –**

  "शिक्षण एक सामान्य सेवा है न की उपदान। उनकी द्रष्टि मे प्रभावी शिक्षण वह क्रिया है जिसके माध्यम से बालक के सार या मस्तिक मे भारी परिवर्तन किया जाता है तथा उसके प्रत्यक्ष ज्ञानात्मक अवबोध तक पहुँचा जाता है।"

- **<u>थॉमस एफ ग्रीन के अनुसार-</u>**

  "शिक्षण मानवीय कार्य का ऐसा उदाहरण है जिसका उदेश्य कार्य करने की मानवीय क्षमता को अभिवृदि करना है।"
- उन्होने एक शिक्षण अविछिन्नक(continuum) की कल्पना की है जिसके एक सिरे पर अनुबंधन तथा प्रशिक्षण जैसी क्रियाये प्रदर्शित की जाती है और दूसरे सिरे पर मतारोपन एवं अनुदेशन की क्रियायों को रखा जाता है। इस आविछिन्नक के ठीक मध्य मे शिक्षण की क्रिया को दिखाया जाता है। शिक्षण के इस मध्यवर्ती अनुक्षेत्र को इष्टम रूप मे बौद्धिक एवं आलोचनात्मक चिंतन तथा तर्क के आधार पर प्रतिष्ठत माना जाता है।

- एन एल गेज के अनुसार-

  “शिक्षण एक अंतर्वयक्तिक प्रभाव का कार्य है जिसके द्वारा दूसरे व्यक्तियों के आचरण तथा आचरण की क्षमता को प्रभावित किया जाता है।”

- क्लार्क के अनुसार -

  “ शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसके प्रारूप तथा परिचालन की वयवस्था इसलिए की जाती है जिससे छात्रो के वयवहार मे परिवर्तन लाया जा सकता है। “

निष्कर्ष

- शिक्षण एक अन्तःप्रक्रिया है जो शिक्षक व छात्र के मध्य किसी विशेष कार्य के लिए संचालित होती है।
- शिक्षक एक सामाजिक तथा वयवसायिक प्रक्रिया है ।
- शिक्षण एक सोद्देश प्रक्रिया है।
- शिक्षण एक विकासात्मक प्रक्रिया है ।
- शिक्षण एक कला तथा विज्ञान दोनों है ।
- शिक्षण मे भाषा सम्प्रेषण का कार्य करती है।
- शिक्षण एक आमने सामने होने वाली प्रक्रिया है।
- शिक्षण एक उपचार विधि है।
- शिक्षण एक तार्किक प्रक्रिया है।
- शिक्षण का मापन किया जाता है।
- शिक्षण मे सुधार तथा विकास भी किया जाता है।
- शिक्षण एक त्रिधुर्वी प्रक्रिया है।

- शिक्षण एक निर्देशन की प्रक्रिया है।
- शिक्षण एक औपचारिक तथा अनौपचारिक प्रक्रिया है।
- शिक्षण एक वयवस्थित क्रियाओ का समन्वित रूप है जिसमे अपनी अंतरक्रिया द्वारा शिक्षक किसी पूर्व नियत अधिगम लक्ष्यो की संप्राप्ति हेतु मोजूदा सामाजिक पर्यावरण मे सप्रयास एवं योजनाबद्ध तरीके से कार्यशील होता है। इस परिप्रेक्ष्य मे विचार करने पर शिक्षण को वयवस्तिथ सप्रयास एवं प्रयोजांबद्ध क्रियायों की श्रेणी मे रखना अधिक न्यायसंगत होगा।

धन्यवाद